हजारीप्रसाद द्विवेदी जी की आलोचनात्मक मान्यताएं

-डॉ. प्रमोद मीणा, प्रोफसर,
हिंदी विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी - 845401

पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी दूसरी परंपरा के पथप्रदर्शक आलोचक

प्रमुख कृतियां – हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का अतीत और हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास

शुक्ल जी की साहित्येतिहासिक मान्यताओं से विरोध के मूल में साहित्यिक मान्यता विषयक मतभेद

साहित्य (शिक्षित) जनता की चित्तवृत्ति का प्रतिबिंब
बनाम
साहित्य जनसमूह के विचारों को सोचने-समझने का साधन

शुक्ल जी द्वारा अशिक्षित और अर्धशिक्षित शब्दों का सबसे ज्यादा प्रयोग वीरगाथा काल और भक्तिकाल पर लिखते समय नाथ-सिद्ध कवियों और ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण कवियों के संदर्भ में

निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी कवियों के प्रति उनके अशिक्षित और असाहित्यिक होने का पूर्वाग्रह अस्वीकार्य क्योंकि सर्जनात्मक साहित्य और शिक्षा में कोई सीधा संबंध नहीं होता

क्या कबीर आदि संत कवियों और सिद्ध-नाथ कविता के प्रति शुक्ली जी के अपने आभिजात्य पूर्वाग्रह ?

शुक्ल कबीर की कविताओं में सहृदयता नहीं पाते और प्रशंसा भी करते हैं तो प्रभाव और चमत्कार की विशेषता वहाँ दिखाते हुए !

हजारप्रसाद द्विवेदी द्वारा कबीर की सहृदयता और वैचारिकता को हिंदी की जातीय परंपरा से जोड़ना

कबीर की साधना की ऐतिहासिक छानबीन करके उन्हें उनका वाजिब स्थान दिलवाना

कृति की समीक्षा उसके ऐतिहासिक-सामाजिक परिवेश में करने वाले

कबीर की कविता और उनकी जाति, निर्गुण साधकों की परंपरा, उनकी साधना विषयक विशेषताओं और इस्लाम के प्रभाव के बीच एकसूत्रता दर्शाना

कृति की समीक्षा में परंपरा के अध्ययन पर बल देने वाले क्योंकि रचना का स्वरूप पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती घटनाओं से तय होता है

कबीर की कविता पर पूर्ववर्ती और पार्श्ववर्ती परंपराओं का प्रभाव न देख पाने के कारण शुक्ल जी की मान्यता कि कबीर मूर्तिपूजा का खंडन मुसलमानी जोश से करते हैं

किंतु हजारीप्रसाद जी अनुसार जाति भेद, ऊँच-नीच और बाह्य कर्मकांडों पर प्रहार करने की हमारी पुरानी परंपरा रही है, जैसे सिद्ध और नाथ परंपरा

अपनी ऐतिहासिक और सामाजिक समझ के साथ हजारीप्रसाद द्विवेदी शुक्ल जी की भक्तिकाल विषयक मान्यता को झकझोर डालते हैं

भक्ति की उत्पत्ति

रामचंद्र शुक्ल - अपने पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और शरण में जाने के अलावा कोई और रास्ता ही न था

हजारीप्रसाद दविवेदी - अगर मुसलमान न भी आये होते तो भी हिंदी साहित्य का बारह आना अधिकांश ऐसा ही होता

भक्तिकाल जातीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास

- भक्ति साहित्य जैसे उत्कृष्ट साहित्य का स्वर पराजय और निराशा का नहीं
- भक्ति द्राविड़ उपजी लाये रामानंद

आदिकालीन हिंदी साहित्य का अध्ययन कथानक रूढ़ियों और काव्य रूढ़ियों के संदर्भ में करने वाले

अतार्किक लगते हुए भी ये चीजें तत्कालीन सामान्य मनुष्य की उस धारणा और दृष्टि की परिचायक जिनसे कथानक का ढांचा बनता है

हजारी प्रसाद द्विवेदी की सबसे बड़ी शक्ति : - सारे पांडित्य और शास्त्र ज्ञान को एक तरफ रखकर सहज और सामान्य आदमी की तरह देख और सोच पाना

आचार्य द्विवेदी सहजता, लोकचेतना और सामान्य मनुष्य को देख पाने की शक्ति से ही वैज्ञानिक इतिहासकासर बनते हैं

शुक्ल जी की तरह रसग्राहिता द्विवेदी की भी बड़ी शक्ति और किसी भी आलोचक की यह सबसे बड़ी कसौटी

किंतु आप प्रभाववादी आलोचक नहीं : भावपरक व्याख्या करते हुए भी दलित द्राक्षा के समान हृदय का अशेष रस बहुत कम उड़लने वाले

प्रभाववादी समीक्षा को लेकर रामचंद्र शुक्ल के नकार को ज्यों का त्यों नहीं स्वीकारना

पहले लेखक की विशेषता बताना और फिर पहले कथन की पुष्टि में भावपरक व्याख्या करना किंतु यहाँ कोरा भाव नहीं होता अपितु लेखक के पर्यवेक्षण से अर्जित बोध गुणात्मक रूप से परिवर्तित होकर भाव बन जाता है

प्रेमचंद के संदर्भ में द्विवेदी की भावपरक रसवादी व्याख्या :

"कोई भी जिज्ञासु मानवती बहू को, कोठे पर बैठी वार-विलासिनी को, रोटियों के लिए ललकते हुए भिखमंगे को, कूट परामर्श में लीन गोयंदों को, ईर्ष्या परायण प्रोफेसरों को, दुर्बल हृदय बैकरों को, साहसी चमारों को, ढोंगी पंडित को, फरेबी पटवारी को और नीचाशय अमीर को देख सकता है। और निश्चिंत होकर विश्वास कर सकता है कि जो कुछ उसने देखा है, वह गलत नहीं है। इससे अधिक सच्चाई के साथ दिखा सकनेवाले परिदर्शक को हिंदी और उर्दू की दुनिया नहीं जानती"

द्विवेदी साहित्य को सामाजिक संदर्भों में देखने वाले मानववादी आलोचक

वे जीवंत मनुष्य और उसके समाज को सारी साधनाओं अर्थात् संस्कृति का केंद्र मानने वाले और इसीलिए वे मानते हैं कि साहित्य को ठीक-ठीक समझने के लिए संस्कृति के तमाम अंगों का अध्ययन अपेक्षित

मनुष्य की जययात्रा में और गंगा के समान अबाधित अनाहत धारावाली उसकी दुर्दम जिजीविषा में भरोसा रखने वाला यह चिंतक स्वत: ही प्रगतिशील

प्रगतिशीलता को सांप्रदायिकता के उस खतरे के प्रति भी आगाह करना जिसके कारण भक्ति आंदोलन चूर्ण-विचूर्ण हो गया था

समन्वयवाद का असली अर्थ समझाने वाले

अतिवादियों के बीच समझौतावादी मध्यम मार्ग खोजने की जगह
अतिवादियों की आवेग तरल विचारधारा का शिकार न होना महत्वपूर्ण
और मूल सत्य को पकड़ लेना जरूरी

पुरातनता को जाननेवाले द्विवेदी जी आधुनिकता पर भी सम्यक विचार कर सके हैं

वस्तु को आत्मनिरपेक्ष ढंग से देखना आधुनिकता बताना किंतु साथ में यह भी स्पष्ट कर देना कि इस वैज्ञानिक चित्तवृत्ति का प्रधान आनंद कौतूहल में है, उत्सुकता में है, न कि आत्मीयता में

अनासक्त भाव से देखना आधुनिकता की पहली शर्त और यह बोध यथार्थ को समझने के लिए परिवेश को समझने पर बल देता है

किंतु व्यक्ति की दृष्टि से देखने का निषेध होने पर भी कहीं व्यक्ति और उसके समाज के हितों की उपेक्षा न करना

आधुनिकता को पुरातन से विद्रोह नहीं अपितु उसका विकास समझने वाले किंतु उन अतीतवादियों की जमात में शामिल नहीं जो समष्टि और इहलौकिकता को वेदों में भी खोज निकालते हैं

निष्कर्ष : हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रगतिशील किंतु प्रगतिवादी जड़ आलोचक नहीं,
आधुनिक किंतु आधुनिकतावादी नहीं,
सांस्कृतिक चेतना संपन्न किंतु पुरातनवादी नहीं, भावुक रसवादी किंतु प्रभाववादी नहीं, इतिहासवादी किंतु आभिजात्यवादी नहीं

धन्यवाद